भजनः चादर हो गई बहुत पुरानी

चादर हो गई बहुत पुरानी,
अब तो सोच समझ अभिमानी ।टेक।

अजब जुलाहा जावर बीनी,
सूत करम की तानी।
सुरत निरति का भरना दीनी,
तब सबके मन मानी।1।
मैले दाग परे पापन के,
विषयन में लपटानी।
ज्ञान का साबुन लाय न धोया,
सतसंगति का पानी।2।
भई खराब गई अब सारी,
लोभ मोह में सानो।
सारी उमर ओढ़ते बीती,
भली बुरी नाँह जानी।3।
शंका मानि जान जिय अपने,
है यह वस्तु बिरानी।
कहै कबीर यहि राखु यतन से,
ये फिर हाथ न आनी।4।

भजनः चदरिय झीनी रे झीनी

चदरिया झीनी रे झीनी, राम नाम भीनी ।टेक।

अष्ट कमल का चरखा बनाया, पाँज तत्व की पूनी।
नौ दस मास बुनन को लागे, मूरख मैली कीनी।।

जब मोरि चादर बन घर आई, रंगरेज को दोनी।
ऐसा रग रंगा रंगरेज ने, लालों लाल कर दीनी।।

चादर ओढ़ शंका मत करिये, ये दो दिन तुमको दीनी।
मूरख लोग भेद नहिं जाने, दिन दिन मैली कीनी।।

ध्रुव प्रहलाद सुदामा ने ओढ़ी, शुकदेव ने निर्मल कीनी।
दास कबीर ने ऐसी ओढ़ी, ज्यों की त्यों धरि दीनी।।

भजनः मोको कहाँ ढूढ़े बन्दे

मोको कहाँ ढूढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पास में।टेक।

ना तीरथ में ना मूरत में, ना एकान्त निवास में।
ना मन्दिर में ना मस्जिद में, ना काशी कैलाश में।।

ना मैं जप में ना मैं तप में, ना मैं बरत उपास में।
ना मैं क्रिया कर्म में रहता, नहीं योग संन्यास में।।

नहीं प्राण में नहीं पिंड में, न ब्रह्याण्ड अकाश में।
ना मैं भृकुटि भंवर गुफा में, सब श्वासन की श्वास में।।

खोजी होय तुरत मिल जाऊं, एक पल की ही तलाश में।
कहिंह कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वांस में।।

भजनः साहब तेरा भेद न जाने कोई

साहब तेरा भेद न जाने कोई। टेक।

पानी लै लै सबुन लै लै, मल मल काया धोई।
अन्तर धट का दाग न छूटै, निर्मल कैसे होई।।

या घट भीतर बैल बंधे हैं, निर्मल खेती होई।
सुखिया बैठे भजन करत हैं, दुखिया दिन भर रोई।।

या घट भीतर अगिन जरत है, धूम न परगट होई।
कै दिल जाने अपना भाई, कै सिर बीती होई।।

जड़ बिनु बेल बेल बिनु तुम्बा, फूले फल होई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, गुरू बिन ज्ञान न होई।।

भजनः नर तुम काहे को माया जोरी

नर तुम काहे को माया जोरी।टेक।

कौड़ी कौड़ी माया जोरी, कीन्हे लक्ष करोरी।
जब खर्चन को बेरा आई, रह गये हाथ सिकोरी।।

हाथी लाये घोड़ा लाये, लाये सैन बटोरी।
अन्त समय कुछ काम न आवे, चढ़े काठ की घोरी।।

जाय उतारे श्मशान घाट में, कपड़ा लीना छोरी।
भ्राता पुत्र विमुख होय बैठे, फूंक दीन जैसे होरी।।

देते दान भयो दुःख भारी, हाथ पाँव जस तोरी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, डारि नरक माँ चोली।।

आरतीः कैसे मैं आरति करों तुम्हारी

कैसे मैं आरति करों तुम्हारी । महा मलिन गति देह हमारी ।।
मैलसे उपज्यो संसारा । हौ छुतिया गुण गाउँ तुम्हारा ।।
झरनाझरे दशोदिशि द्वारे । कैसे मैं आवो निकट तुम्हारो ।।
जब तुम देहु अग्रकी देही । जब हम होइहौं नाम सनेही ।।
मलयागिरिमें बसे भुजंगा । विष अमृत गो एक संगा ।।
तिनुका तोरि देहु परवाना । तब हम पाएब पद निरवाना ।।
घनी घर्मदास कबीर बलगाजे । गुरू प्रतपि आरती साजे ।।

भजनः मन लागा मेरा यार फकीरी में

मन लागा मेरा यार फकीरी में । टेक
जो सुख पायो राम भजन में सो सुख नाहिं अमीरी में ।
भला बुरा सबका सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में । मन
प्रेममगर में रहिनो हमारी, भलि बनि आई सबूरी में ।
हाथ में कुंडी बगल में सोटा, चारों दिशा जगीरी में । मन
आखिर ये तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में ।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, साहिब मिले सबूरी में । मन

भजनः नेहरवा हमको न माद्यै

नेहरवा हमको न माद्यै । टेक
सांई की नगरी परम अति सुन्दर,
जहाँ कोई जाय न आवै
चांद सूरज जहँ पवन न पानी,
को संदेश पहुंचावै
दरद यह साँई को सुनावै
आगै चलौं पथ नहिं सूझै,
पीछे दोष लगावै
केहि विधि ससुरे जाऊं मोरी सजनी
विषनैस नाच नचावैं
विरहा जोर जनावै
बिन सतगुरू अपनो नहिं कोई
जो यह राह बतावैं
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो
सुपने न पीतम पावै
तपन तह जिसकी बुझावै

भजनः तन का तनक भरोसा नाहीं

तन का तनक भरोसा नाहीं, काहे करत गुमाना रे । टेक ।
टेढ़े चले मरोड़े मूंछे, विषय मांहि लिपटाना रे
ठोकर लागे चेतकर चलना, कर जय प्रान पियाना रे
मेरा मेरा करता डोले, माया देख लुभाना रे
या बस्ती में रहना नाहिं, साँचा घर उठ जाना रे
मीर फकीर ओलिया–जोग, रहा न राज राना रे
पर तक मारे काल अचानक बना रे
काम–क्रोध, मद–लोभ छोड़कर, शरण धनी के आना रे
कहत 'कबीर' सुनो भाई सन्तो बसरि नाम,
तिरलोकहुँ नहीं ठिकाना रे । तन का तनक.....

भजनः तोरी गठरी में लागे

तोरी गठरी में लागे चोर बटोहिया काहे सोवे । टेक
पाँच पचीस तीन हैं चोर यह सब किन्हा शोर
जाग सवेरा बाट सवेरा फिर न लागे जोर
भवसागर एक नदी बतह है बिन उतरे जीव बोर
कहे 'कबीर' सुनो भाई साधो जगत कीजे भोर

भजनः एक दिन जाना होय जरूर

एक दिन जाना होय जरूर ।टेक
हिरणाकश्यप और हिरणादिक करी तपस्या पूरी ।
बैर कीना प्रहलाद भक्त से, मिल गए माटी धूर । एक....
रावण कुम्भकरण बलवाना, बहुत कहें हम शूर ।
रामचन्द्र से बैर बढ़ायो, हो गए चकनाचूर । एक....
राम लक्ष्मण भये ऐसे ज्ञानी, हुए मरयादा पूर
तेऊ जग में रहन न पाये, समझि देख मन क्रूर । एक....
विभीषण ऐसे पारदर्शी करत दान भरपूर
तेऊ तत तजि सुरलोक सिधारे,जाने सकल जहूर । एक....
दस अवतार भये जग माहीं सब जीवन के क्रुर
तिनको पलक ने पकड़ा नेक करेऊ नहिं हूर । एक....
जैसा कर्म करे जो कोई, तैसा मिले जरूर
कहैं 'कबीर' सुनो भाई साधो, ठाड़े काल जहूर । एक....